शृंगारमञ्जरीकथा में गणिका का स्वरूप

(Presented in World Sanskrit Conference, New Delhi, 2001)

— आयशा अनवर
शोध–छात्रा, संस्कृत विभाग,
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़।

ग्यारहवीं शताब्दी तक में विख्यात सुवन्धु रचित वासवदत्ता वाणकृत कादम्वरी धनपाल विरचित तिलकमंजरी आदि ग्रन्थों के मध्य भोजरचित शृंगारमञ्जरीकथा नामक ग्रन्थ का एक महत्वपूर्ण स्थान रहा। कथा और आख्यायिका के रूप से सम्पृक्त शृंगारमञ्जरीकथा ग्रन्थ का भी एक उद्देश्य रहा है। मूलतः इस ग्रन्थ का विषय वस्तु गणिकाओं के जीवन से सम्वन्धित है। इस ग्रन्थ के अतिरिक्त सोमदेव कृत कथासरित्सागर, क्षेमेन्द्र रचित कलाविलास, शूद्रक रचित मृच्छकटिक, दामोदरगुप्त विरचित कुट्टनीमत आदि ग्रन्थों में भी गणिका के स्वरूप पर चर्चा उपलब्ध होती है।

सभ्यता के आरम्भ से ही गणिकाएँ समाज का एक अपरिहार्य अंग थीं । वेद महाकाव्य, पुराण आदि के समय से ही गणिकाओं के अस्तित्व का पता चलता है।[१] महात्मा वुद्ध के समय में आम्रपाली नामक विख्यात गणिका राजा विम्वसार के आश्रय में थी। महाभारत में भी उल्लेख आता है कि धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से युयुत्सु नामक पुत्र वेश्या से जन्मा था।[२] इसी प्रकार कौटिल्य के अर्थशात्र, वात्स्यायन कृत कामसूत्र, भरतमुनि रचित नाट्यशास्त्र आदि ग्रन्थों में भी गणिका के विषय में विस्तृत जानकारी उपलब्ध होती है।

विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण में गणिका को नायिका का स्थान दिया है ः–
धीर कला प्रगल्भा स्याद्वेश्या सामान्यनायिका। – **३.६७**
एक स्थान पर साधारण तथा सामान्य स्त्री को गणिका वताया गया है, जो कलाओं में कुशल तथा प्रगल्भ तथा धूर्तता में युक्त होती थी।
साधारण स्त्री गणिका कलाप्रागल्भ्यधौर्त्यययुक।।

गणिका की उत्पत्ति के विषय में प्राकृत भाषा रचित संघदासगणि वाचक वसुदेवहिण्डी में कथा उपलब्ध होती है। इसी से मिलती हुई कथा संस्कृत भाषा में विरचित वुद्वस्वामी कृत वृहत्कथाश्लोकसंग्रह में भी प्राप्त होती है।

---

[१] Moti Chand, The World of Courtesan, Chapter 2, Page 26
One of the ministers praised the beauty and youth of Amrapali and her accomplishment in the sixty-four arts.

[२] महाभारत, आदि पर्व सम्भव पर्व, **११४.१**
जग्गे भीमास्ततस्तस्यां युयुत्सु करणो नृप ।
एवं पुत्रशतं जग्गे धृतराष्ट्रस्च धीगतः ।।
महारथानां वीराणां कन्या चैका शताधिका ।
युयुत्सुश्च महातेजा वेश्यापुत्रः प्रतापवान ।।

वसुदेवहिण्डी के अनुसार गणिका की उत्पत्ति भरत के समय ही मानी जाती रही है। कथा के अनुसार कुछ सामन्ती शासकों ने राजा को कुछ कुमारियाँ भेंट की । वे सभी राजसभा में भेजी गई। महल में पत्नी के साथ बैठे हुए राजा ने उन कुमारियों को आते हुए देखा। पत्नी द्वारा पूछताछ करने पर राजा ने बताया कि सामन्ती शासकों ने उन्हें भेंट स्वरूप प्रदान की है। रानी को डर था कि यहाँ रहते हुए वे (कुमारियाँ) राजा को अधिक प्रिय न हो जाएँ अतः वह अनर्थ के निराकरण का उपाय सोचने लगी।[३] रानी ने राजा से अपने दुःख का कारण बताया। राजा ने पत्नी के दुःख को जानकर उन कुमारियों को भवन के अन्दर प्रवेश न करने का आदेश दिया। रानी ने भी राजा के विचार जानकर उन कुमारियों को बाह्य कक्षों में रहने की अनुमति दे दी।

बाह्य कक्षों में रहती हुई वे कन्याएँ राजसी छत्र पकड़ने का कार्य करने लगी। समय के साथ-साथ वे कन्याएँ विभिन्न गणों में बट गईं। इस प्रकार गणिकाओं की उत्पत्ति मानी जाती है।

बृहत्कथाश्लोकसंग्रह में यही कथा कुछ परिवर्तन के साथ उपलब्ध होती है। कथानुसार एक बार भरत राजा ने देश विदेश से सुन्दर कन्याओं का आह्वान किया एवं उन सभी से विवाह किया। राजा को विश्वास था कि वह उन कन्याओं के साथ आनन्द का अनुभव करेंगे किन्तु उन्हे निराशा ही हाथ लगी। तब राजा ने उन सुन्दर कन्याओं को आठ गणों में बाँटा। प्रत्येक गण में मुख्या की व्यवस्था थी। मुख्या को राजसी विशेषाधिकार थे। वे राजा के छत्र व चंवर पकड़ने का कार्य करती थी। राजा ने इन स्त्रियों को "महागणिका" की उपाधि प्रदान की। इस प्रकार गणिका का स्वरूप भरत के समय से ही दिखाई पड़ता है।[४]

राज्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए कर वसूलने के अनेक उपायों में से गणिकाओं का संगठन भी कर वसूलने का एक प्रमुख स्रोत था। इनका निवास स्थान दक्षिण की ओर था ।[५] गणिका के अध्यक्ष या मुख्य को गणिकाध्यक्ष कहते थे। सुन्दरता और अलंकार की अधिकता के आधार पर ही गणिकाओं का वेतन निश्चित होता था।

---

[३] वसुदेवहिण्डी, पृ० **१०३**
दिट्ठाओ य पासायगमाय देवीए सह राइणा। पुच्छिओ अणाय रामा-कस्स एसो खंधावारो? तेण य से कहिय-कुमारियों मम सामंतेहिं पेसियाओ। तिय चिंतियं अणागमं से करेमि तिगिच्छमं एत्तियमित्तीसु कयाइ एगा बहुगा वा वल्लभाओ होज्जत्ति।

[४] वसुदेवहिण्डी, **१०.१८९**
य एष गणिकाभेद इदानीमापि दृश्यते।
ततः कालात्प्रभृत्येव भरतेन प्रवृर्तितः।।

[५] अर्थशास्त्र, **१.१**
पृथिव्या लाभे पालने च यावन्त्यर्थशास्त्राणि पूर्वाचार्यैः।
प्रस्तावितानि प्रायशस्तानि संहृत्यैकमिदमर्थशास्त्रं कृतम।।